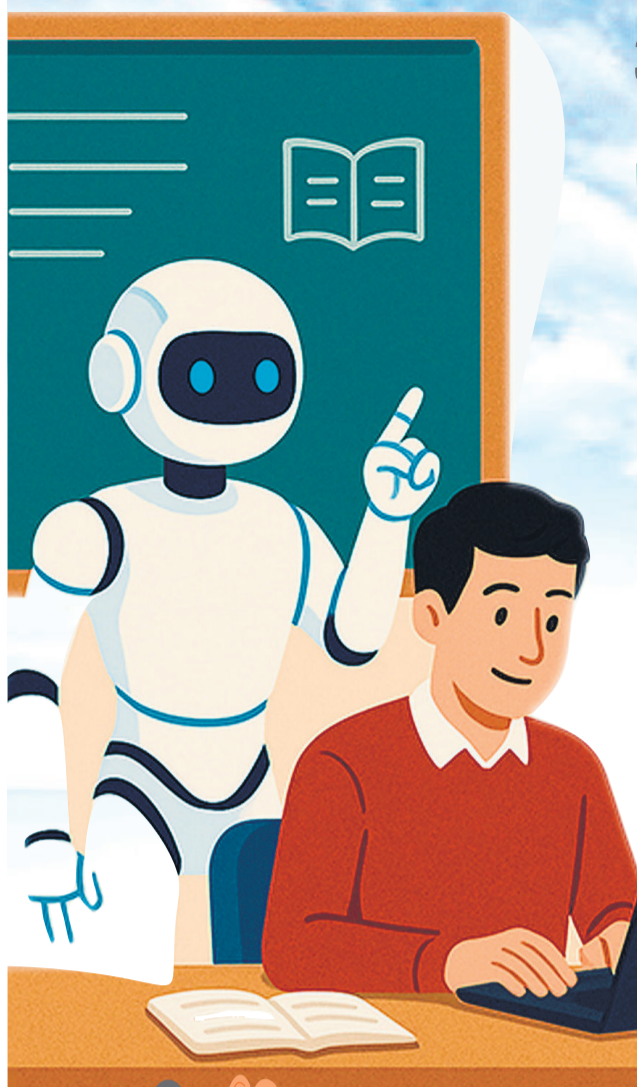


कैम्पस

क्लासरूम में एआई

शिक्षक का विकल्प या सहायक



कभी ब्लैकबोर्ड शिक्षा का प्रतीक था। फिर स्मार्ट बोर्ड आए, डिजिटल कंटेंट आया, ऑनलाइन क्लासेस आई। अब शिक्षा की दुनिया एक ओर बड़े बदलाव के दौर में है—आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई तेजी से क्लासरूम में प्रवेश कर रहा है। स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों और एडटेक प्लेटफॉर्मों में एआई आधारित टूलस का इस्तेमाल बढ़ रहा है। कोई इसे शिक्षा का भविष्य बता रहा है, तो कोई इसे शिक्षक की भूमिका पर संकट मान रहा है। ऐसे में सवाल केवल तकनीक का नहीं, शिक्षा की आत्मा का है—वया एआई शिक्षक का विकल्प बन सकता है या वह केवल उसका सहायक रहेगा?



राजेश जैन
वरिष्ठ पत्रकार

वर्ड रिमथ

Examination शब्द की उत्पत्ति

'Examination' शब्द आज पढ़ाई, परीक्षा और जांच के अर्थ में पूरी दुनिया में इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन इसकी जड़ें हजारों साल पुरानी लैटिन भाषा में छिपी हैं। यह शब्द लैटिन के 'Examinare' से बना है। पुराने समय में 'Examen' का अर्थ होता था तराजू को सूई या संतुलन जांचने वाला उपकरण। जब किसी वस्तु का सही वजन पता करना होता था, तो उसे तराजू पर तौला जाता था। इसी प्रक्रिया को 'Examinare' कहा जाने लगा यानी किसी चीज को ध्यान से परखना या जांचना। मध्यकालीन यूरोप में जब विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का विकास हुआ, तब छात्रों की योग्यता जांचने की प्रक्रिया को 'Examination' कहा जाने लगा। अंग्रेजी भाषा में यह शब्द लगभग 14वीं शताब्दी के आसपास प्रचलित हुआ। धीरे-धीरे इसका अर्थ किसी व्यक्ति के ज्ञान, क्षमता, स्वास्थ्य या तथ्यों की जांच से जुड़ गया। आज स्कूल की परीक्षा से आदि में 'Examination' शब्द का उपयोग होता है।



नोटिस बोर्ड 15 मई से होंगी परीक्षाएं



महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कैम्पस में संचालित बीए, बीएससी एग्रीकल्चर, बीएमएस, बीएमएम, बीटेक, एमटेक-पीएचडी, बीफार्मा, एमफार्मा, एमसीए, एमबीए, एमए, एमएससी, एमएसडब्ल्यू, बीएड, एमएड, एलएलएम समेत विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की मुख्य एवं वैक परीक्षाएं 15 मई से शुरू होंगी। रुवि द्वारा जारी परीक्षा कार्यक्रम के अनुसार एमए अर्थशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, एमएसडब्ल्यू तथा बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं भी इसी दिन से आयोजित की जाएंगी।

एआई ने शिक्षा के पारंपरिक ढांचे को चुनौती देना शुरू कर दिया है। आज ऐसे प्लेटफॉर्म मौजूद हैं, जो छात्र की सीखने की गति, उसकी कमजोरियां और उसकी रुचि के आधार पर व्यक्तिगत अध्ययन सामग्री तैयार कर सकते हैं। किसी छात्र को गणित में कठिनाई है, तो एआई उसे अतिरिक्त अभ्यास देगा। किसी को विज्ञान के विजुअल कंटेंट से बेहतर समझ आती है, तो वही सामग्री सामने आएगी। यह शिक्षा को "एक जैसी पढ़ाई सबके लिए" वाले मॉडल से निकालकर व्यक्तिगत सीखने की दिशा में ले जा रहा है। यही कारण है कि एआई को शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने वाली तकनीक भी कहा जा रहा है। दूर-दराज के क्षेत्रों में जहां अच्छे शिक्षकों की कमी है, वहां एआई आधारित डिजिटल ट्यूटर गुणवत्तापूर्ण सहायता दे सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र चौबीसों घंटे डाउट सॉल्विंग और प्रैक्टिस मॉड्यूल पा सकते हैं। शिक्षकों के लिए भी यह तकनीक राहत ला सकती है—कॉपी जांचना, रिपोर्ट बनाना, टेस्ट एनालिसिस करना और कमजोर छात्रों की पहचान जैसे कार्य अब मशीनें कर सकती हैं। यहीं से बहस शुरू होती है। क्या शिक्षा केवल सूचना का आदान-प्रदान है? यदि हां, तो मशीनें इसे मनुष्यों से अधिक कुशलता से कर सकती हैं, लेकिन यदि शिक्षा का अर्थ सोचने की क्षमता विकसित करना, जिज्ञासा जगाना, नैतिकता सिखाना, आत्मविश्वास भरना और जीवन की दिशा देना है, तो फिर शिक्षक की भूमिका मशीन से कहीं आगे है। शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाता, वह व्यक्तित्व गढ़ता है। वह छात्र की आंखों में छिपी उलझन पढ़ता है, उसके आत्मविश्वास में आई कमी महसूस करता है, असफलता के बाद उसे संभालता है और कभी-कभी उसके जीवन का सबसे बड़ा प्रेरक बन जाता है। एआई डेटा पढ़ सकता है, भावनाएं नहीं। वह उत्तर दे सकता है, लेकिन जीवन की दिशा नहीं दे सकता।

शैक्षणिक ईमानदारी का संकट

एआई के बढ़ते उपयोग के साथ दूसरी बड़ी चिंता सीखने की प्रक्रिया को लेकर है। यदि छात्र हर प्रश्न का उत्तर मशीन से तुरंत पाने लगेंगे, तो क्या उनकी स्वयं सोचने और संघर्ष करने की क्षमता घटेगी? शिक्षा केवल सही उत्तर पाने की कला नहीं, बल्कि सही उत्तर तक पहुंचने की बौद्धिक यात्रा है। कठिन प्रश्नों से जुझना, गलती करना, फिर समझना—यही वास्तविक सीखना है। यदि एआई हर समस्या का तत्काल समाधान देगा, तो यह प्रक्रिया कमजोर पड़ सकती है। शैक्षणिक ईमानदारी का संकट भी सामने है। दुनियाभर के शिक्षण संस्थान इस चुनौती से जूझ रहे हैं कि छात्र असाइनमेंट, निबंध, प्रोजेक्ट और यहां तक कि शोध कार्य तक एआई से तैयार करा रहे हैं। इससे मूल्यांकन की पारंपरिक पद्धति अप्रासंगिक होती जा रही है। आने वाले वर्षों में शिक्षा व्यवस्था को "याद करके लिखने" वाले मॉडल से हटकर "सोचकर प्रस्तुत करने" वाले मॉडल की ओर जाना होगा।

भारत के संदर्भ में एआई का प्रश्न

भारत के संदर्भ में एआई का प्रश्न और जटिल है। देश में लाखों छात्र अब भी बुनियादी डिजिटल संसाधनों से वंचित हैं। ऐसे में एआई आधारित शिक्षा यदि बिना तैयारी के लागू होती है, तो यह नई डिजिटल असमानता पैदा कर सकती है, जहां एक वर्ग "स्मार्ट लर्निंग" पाएगा और दूसरा अभी भी पारंपरिक कमजोर ढांचे में फंसा रहेगा। यानी एआई अवसर भी है और असमानता का जोखिम भी। एक और गंभीर चिंता है डेटा गोपनीयता की। एआई आधारित लर्निंग प्लेटफॉर्म छात्रों का शैक्षणिक व्यवहार, प्रदर्शन, आवेदन और मानसिक पैटर्न तक रिकॉर्ड कर रहे हैं। यह डेटा भविष्य में कैसे इस्तेमाल होगा? क्या यह केवल सीखने के लिए होगा या व्यावसायिक लाभ का साधन भी बनेगा? शिक्षा क्षेत्र में डेटा का यह केंद्रीकरण नीति-निर्माताओं के लिए नया प्रश्न है।



शिक्षा व्यवस्था के लिए निर्णायक मोड़

तमाम आशंकाओं के बीच एक बात स्पष्ट है कि एआई को रोक नहीं जा सकता। जैसे इंटरनेट और स्मार्टफोन शिक्षा का हिस्सा बने, वैसे ही एआई भी बनेगा। असली प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा व्यवस्था इस बदलाव के लिए तैयार है? भविष्य संभवतः "एआई बनाम शिक्षक" का नहीं, बल्कि "एआई + शिक्षक" का होगा। मशीनें दोहराव वाले, विश्लेषणात्मक और डेटा-आधारित कार्य संभालेंगी, शिक्षक रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, संवाद, मूल्य और प्रेरणा पर ध्यान देंगे। यानी शिक्षक की भूमिका समाप्त नहीं होगी—वह और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी, पर उसका स्वरूप बदल जाएगा। कल का सफल शिक्षक वह होगा जो केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि तकनीक के साथ पढ़ाना जानता हो। जो एआई का उपयोग छात्रों की कमजोरी पहचानने, कंटेंट

अनुकूलित करने और कक्षा को अधिक प्रभावी बनाने में कर सके और जो यह समझे कि तकनीक सहायक है, शिक्षक का प्रतिस्थापन नहीं। शिक्षा व्यवस्था के लिए यह एक निर्णायक मोड़ है। यदि एआई को बिना नीति, प्रशिक्षण और नैतिक ढांचे के अपनाया गया, तो यह शिक्षा को सतही, निर्जीव और असमान बना सकता है, लेकिन यदि इसे समझदारी से शिक्षक-केंद्रित मॉडल में जोड़ा गया, तो यह सीखने को अधिक व्यक्तिगत, प्रभावी और समावेशी बना सकता है। अंत में कह सकते हैं कि क्योंकि ज्ञान मशीन दे सकता है, लेकिन सीखने की प्रेरणा अब भी इंसान ही देता है। बेशक, एआई क्लासरूम में आया है और रहेगा, पर वह शिक्षक की कुर्सी पर नहीं, वह शिक्षक के बगल में बैठेगा।

सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग

टेक्नोलॉजी की दुनिया का नया भविष्य

आज के दौर में ज्यादातर छात्र कंप्यूटर साइंस को सबसे सुरक्षित और लोकप्रिय करियर विकल्प मानते हैं, लेकिन टेक्नोलॉजी की दुनिया अब केवल सॉफ्टवेयर तक सीमित नहीं रही। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक व्हीकल और ऑटोमेशन जैसी तकनीकों के बढ़ते इस्तेमाल ने सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग को तेजी से उभरता हुआ करियर बना दिया है। आने वाले वर्षों में यह क्षेत्र युवाओं के लिए शानदार अवसर लेकर आ सकता है।



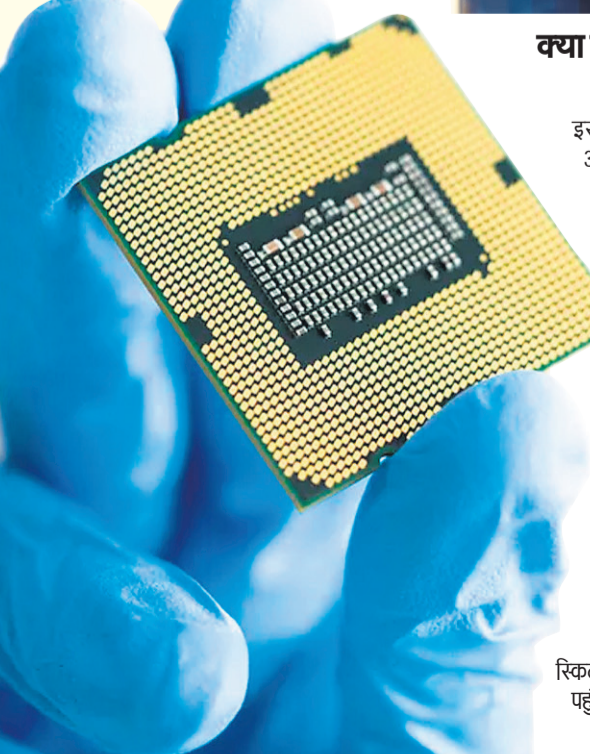
क्या है सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग

सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग वह क्षेत्र है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक चिपस और माइक्रोप्रोसेसर को डिजाइन करने, विकसित करने और टेस्ट करने की तकनीक सिखाई जाती है। आज मोबाइल फोन, लैपटॉप, स्मार्ट टीवी, कार, मेडिकल उपकरण और यहां तक कि घरेलू मशीनों में भी सेमीकंडक्टर चिपस का उपयोग होता है। आसान शब्दों में कहें तो हर स्मार्ट डिवाइस की "ब्रेन" यही चिप होती है। इन्हें तैयार करने और बेहतर बनाने का काम सेमीकंडक्टर इंजीनियर करते हैं।



क्यों बढ़ रही है इस फील्ड में मांग

कोरोना काल के दौरान दुनियाभर में चिपस की कमी देखने को मिली थी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री आधुनिक तकनीक की रीढ़ है। यही कारण है कि अब कई देश इस सेक्टर में बड़े स्तर पर निवेश कर रहे हैं। भारत सरकार भी "इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन" के जरिए देश में चिप निर्माण को बढ़ावा दे रही है। इसके अलावा Intel, TSMC और Qualcomm जैसी बड़ी कंपनियां लगातार नए प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हैं। इससे इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं।



क्या पढ़ाया जाता है बीटेक सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग में

इस कोर्स में छात्रों को इलेक्ट्रॉनिक्स और चिप डिजाइन से जुड़ी आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी जाती है। मुख्य विषयों में शामिल हैं— VLSI Design, Embedded Systems, Microelectronics, Chip Fabrication, Circuit Design। इन विषयों के माध्यम से छात्र चिप निर्माण और हार्डवेयर टेक्नोलॉजी की गहराई को समझते हैं।

करियर और सैलरी की संभावनाएं

सेमीकंडक्टर इंजीनियरिंग करने के बाद छात्र चिप डिजाइन इंजीनियर, VLSI इंजीनियर, हार्डवेयर इंजीनियर, रिसर्च साइंटिस्ट और मैन्युफैक्चरिंग एक्सपर्ट जैसे पदों पर काम कर सकते हैं। शुरुआती स्तर पर इस क्षेत्र में सालाना 6 से 12 लाख रुपये तक का पैकेज मिल सकता है। अनुभव और स्किल बढ़ने के साथ सैलरी 20 लाख रुपये या उससे अधिक तक पहुंच सकती है। विदेशों में भी इस फील्ड की मांग काफी अधिक है, जिससे ग्लोबल करियर के अवसर भी मजबूत बनते हैं।

करेंट अफेयर्स

- भारत का पहला पूरी तरह डिजिटल बैंकिंग अपनाने वाला राज्य केरल (Kerala) माना जाता है। केरल ने डिजिटल बैंकिंग और डिजिटल पैमेंट सिस्टम को गांव-गांव तक पहुंचाकर पूरे देश में एक नई मिसाल पेश की। राज्य सरकार, बैंकों और स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से केरल ने यह सुनिश्चित किया कि लगभग हर नागरिक बैंकिंग सेवाओं से डिजिटल रूप से जुड़ सके।
- दुनिया एक बार फिर इतिहास बनते देखने जा रही है। NASA का Artemis II मिशन इसनाओं को 50 साल बाद चांद की कक्षा में भेजने वाला है। यह मिशन Apollo program के बाद पहला crewed lunar mission होगा, जिससे अंतरिक्ष अनुसंधान में एक नई शुरुआत मानी जा रही है। Artemis II मिशन के तहत अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा की परिक्रमा करेंगे और सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लौटेंगे। यह मिशन भविष्य के Artemis III मिशन के लिए रास्ता तैयार करेगा, जिसमें इसनाओं को चांद की सतह पर उतारने की योजना है।
- हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात (UAE) ने घोषणा की है कि वह अगले महीने से पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (OPEC) से बाहर हो जाएगा। इस कदम के साथ ही UAE की लगभग छह दशकों की सदस्यता समाप्त हो जाएगी। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस कदम से वैश्विक तेल बाजारों का स्वरूप बदल सकता है और OPEC का प्रभाव कमजोर पड़ सकता है। खास बात यह है कि UAE कई दशकों से OPEC का सदस्य रहा है। सबसे पहले 1967 में अबू धाबी के माध्यम से यह संगठन से जुड़ा था और बाद में 1971 में देश बनने के बाद UAE पूर्ण सदस्य बना।
- भारत में वन्यजीवों की समृद्ध विरासत के बीच एशियाई हाथी एक महत्वपूर्ण प्रजाति है। ऐसे में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि भारत में सबसे अधिक हाथी किस राष्ट्रीय उद्यान में पाए जाते हैं। इस सवाल का उत्तर—दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित बंदिपुर राष्ट्रीय उद्यान है, जो हाथियों की बड़ी आबादी के लिए प्रसिद्ध है। यह राष्ट्रीय उद्यान न केवल हाथियों की अधिक संख्या के लिए जाना जाता है, बल्कि यह जैव विविधता का भी प्रमुख केंद्र है। बंदिपुर राष्ट्रीय उद्यान, नीलगिरि संरक्षित जैवमंडल या नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा है, जो भारत का सबसे बड़ा हाथी आवास क्षेत्र माना जाता है।
- हाल ही में भारतीय भारोत्तोलकों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए समोआ के अर्धिया में चल रही राष्ट्रमंडल युवा एवं जूनियर भारोत्तोलन चैंपियनशिप और संबन्धित यूनिवर्सल कप (सीनियर) में प्रतियोगिता के दूसरे दिन चार स्वर्ण पदक जीते। भारतीय वेटलिफ्टर्स ने अलग-अलग कैटेगरी में चार गोल्ड मेडल जीते हैं। यूनिवर्सल कप (सीनियर) इवेंट के साथ-साथ मुकाबला करते हुए, भारत के युवा एथलीटों ने अपनी ताकत, सटीकता और निरंतरता का प्रदर्शन किया है, जो अंतर्राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग में देश के बढ़ते दबदबे का संकेत है।

जॉब अलर्ट

- कुल पद—217
- आवेदन की अंतिम तिथि—18 मई 2026
- वेबसाइट— www.nvsroloko.org
- **संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)**
- पद—विभिन्न गुण 'A' और गुण 'B' राजपत्रित पद
- कुल पद— आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध
- चयन प्रक्रिया— शॉर्टलिस्टिंग (योग्यता/अनुभव/भर्ती परीक्षा के आधार पर) + साक्षात्कार
- वेबसाइट— www.upsc.gov.in और https://upsonline.nic.in
- **सशस्त्र सीमा बल (SSB)**
- पद—कार्टेबल (सामान्य इयूटी) - खेल कोटा के अंतर्गत
- कुल पद—404 पद
- चयन प्रक्रिया— दस्तावेज सत्यापन + खेल उपलब्धि सत्यापन + PST + फील्ड ट्रायल/कौशल परीक्षण
- वेबसाइट— www.recruitment.ssb.gov.in और https://www.ssb.gov.in
- **यूनियन बैंक ऑफ इंडिया**
- पद—अपरेंटिस (अपरेंटिस अधिनियम, 1961 के तहत)
- कुल पद—1865
- स्टाइपेंड— 15,000 रुपये (ग्रामीण/अर्ध-शहरी)। 18,000 रुपये (शहरी), 20,000 रुपये (मेट्रो) प्रति माह
- प्रशिक्षण की अवधि— एक वर्ष
- आवेदन का तरीका— केवल ऑनलाइन (BFSI SSC पोर्टल के माध्यम से)
- चयन का तरीका—ऑनलाइन परीक्षा + स्थानीय भाषा दक्षता परीक्षा
- वेबसाइट— www.unionbankofindia.co.in
- **नवोदय विद्यालय समिति (NVS) क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ**
- पद—PGT, TGT, लाइब्रेरियन और स्टाफ नर्स (संविदा आधारित)
- नौकरी का स्थान—उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड